प्रातः सभा 7/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बच्चों से बाप पूछते हैं, आत्माओं से परमात्मा पूछते हैं, यह तो जानते हो हम परम पिता परमात्मा के सामने बैठे हैं। उनको अपना रथ तो नहीं है। यह तो निश्चय है ना। इस भृकुटि के बीच में बाप (का) निवास स्थान है। बाप ने खुद कहा है मैं इनके भृकुटि के बीच में बैठता हूँ। इनका शरीर लोन पर लेता हूँ। आत्मा भृकुटि के बीच में बैठती है तो बाप भी आकर वहां ही बैठते हैं। ब्रह्मा है तो शिवबाबा भी है। अगर ब्रह्मा नहीं होता तो शिवबाबा भी नहीं होता। अगर कोई कहे हम तो शिवबाबा को ही याद करते हैं ब्रह्मा है नहीं; परन्तु शिवबाबा बोलेंगे कैसे? ऊपर में तो सदैव शिवबाबा को याद करते आये। अभी तुम बच्चों को पता है हम बाप के पास यहां बैठे हैं। ऐसे तो नहीं समझेंगे शिवबाबा ऊपर में है। जैसे भक्ति–मार्ग (में) कहते थे शिवबाबा ऊपर में है उनकी प्रतिमा यहाँ पूजी जाती है। यह बातें बहुत समझने की हैं। जानते .... बाप ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल है। कहां से नॉलेज सुनाते हैं? क्या ऊपर से सुनाते हैं या नीचे आया है? ब्रह्मा तन से सुनाते हैं। कई कहते हैं ब्रह्मा को नहीं मानते; परन्तु शिवबाबा खुद ब्रह्मा तन द्वारा कहते हैं कि मुझे याद करो। यह समझ की बात है ना। माया ऐसी पकड़ती है जो एकदम नाक में दम उड़ा देती है। नम्बरवन समझदार को भी नम्बरवन मूर्ख बना देती है। कितना भी अच्छा बच्चा हो, ऐसे2 ख्यालात लाती है जैसे .....र्या। कहते हैं हम ब्रह्मा को नहीं मानते। ब्रह्मा तो खुद ही कहते हैं शिवबाबा को याद करो; परन्तु यह ..... कहता। इनमें ही शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह मंत्र मैं ब्रह्मा द्वारा देता हूँ। ब्रह्मा (न) होता तो मंत्र कैसे देता। ब्रह्मा नहीं होता तो तुम शिव को फिर कैसे मानेंगे। शिवबाबा पास कैसे बैठेंगे। अच्छे–2 महारथी का भी माया इसमें सत्यानाश कर देती है ऐसे ख्यालात में लाकर। जो कहते हैं हम ब्रह्मा को नहीं मान(ते) (तो) उनकी क्या गति होगी। उनको डैमफुल कहेंगे। माया बड़ी जबरदस्त है। एकदम मुंह फिराकार पिछाड़ी कर दे(ती) (है)। अभी तुम्हारा कांध (मुंह) शिवबाबा ने सामने किया है। सम्मुख बैठे हो। फिर जो ऐसे समझते हैं ब्रह्मा तो कुछ नहीं उनकी क्या गति होगी। दुर्गति को पा लेते हैं। कुछ भी ज्ञान नहीं। मनुष्य पुकारते हैं ओ गॉड फादर (f)फिर यह गॉड फादर सुनता है क्या? उनको तो कहते हैं ना लिबरेटर आओ वा वहां बैठे ही लिबरेट करेंगे? कल्प2 पुरूषोत्तम संगम युग पर ही बाप आते हैं। जिसमें आते हैं अगर उनको ही उड़ा दें तो क्या कहेंगे? नम्बरवन तमोप्रधान। निश्चय होते हुये माया फिराये देती। इतना उसमें बल है जो एकदम वर्थ नॉट पेनी बना देती है। एकदम महामूर्ख बना देती है। ऐसे भी कोई न कोई सेन्टर्स पर हैं। इसलिये बाप कहते हैं खबरदार .....। माया ऐसी है जो एकदम मुँह फिराकर उल्टा कर देगी। फिर उनका क्या हाल होगा। बिल्कुल अधम गति को .... लेंगे। भल किसको सुनाते भी रहे सुनी हुई बातें; परन्तु वह जैसे पंडित मिसल बन जाते। जैसे बाबा पंडित की कहानी बताते हैं ना। उसने कहा राम राम कहने से सागर पार हो जावेंगे। यह एक कहानी बनाई हुई है। .... समय तुम बाप की याद से विषय सागर से क्षीर सागर में जाते हो ना। उन्होंने तो भक्ति मार्ग में ढेर ..... बना दी हैं। पंडित औरों को कहता था। खुद बिल्कुल चट खाते में था। खुद विकारों में जाते रहना और दू(सरों) (से) कहना निर्विकारी बनो। उनका क्या असर होगा। पंडित भी ऐसा था। माई ने पंडित के कहने पर विश्वास रखी। राम राम कहते पार हो गई। एक दिन पंडित को निमंत्रण दिया आप भी चलो हमारे घर भोजन के लिये। रास्ते में एक नदी मिली। पंडित बोला बोट कहां? अरे! आपने तो कहा था, राम राम कहने से सागर पार ... ... है। यह तो नदी ही है। तो उनको लज्जा आने लगी। तो यह एक दृष्टान्त बनाया है। उनकी सिर्फ़ पंडित ..... ऐसे भी ब्रह्माकुमारियां हैं। खुद में निश्चय नहीं, दूसरों को सुनाते रहते हैं। इसलिये कहां2 सुनाने वालों (से) सुनने वाले तीखे चले जाते हैं। अच्छे2 बड़े2 महारथियों से भी वह तीखे चले जाते हैं। जो बहुतों की सेवा (करते) हैं वह जरूर प्यारे तो लगते हैं ना। पंडित झूठा निकल पड़ा तो उनको कोई प्यार करेंगे! फिर प्यार उन(पर) जावेगा जो प्रैक्टीकल में याद करते हैं। अच्छे2 महारथियों को भी माया हप कर लेती है। बहुत हप हो (गये)। बाबा भी समझते हैं अभी तो कर्मातीत अवस्था नहीं है। जब तक लड़ाई तैयार न हो। एक तरफ़ लड़(ाई)

होगी दूसरे तरफ़ कर्मातीत अवस्था होगी। पूरा कनेक्शन है। फिर पढ़ाई पूरी हो जाती है। ट्रान्सफर हो जावेंगे। पहले रुद्र माला बनती है। यह बातें और कोई नहीं जानते। तुम समझते हो इस दुनियां को बदलना है। वह तो समझते हैं अजुन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। तुम समझते हो विनाश सामने खड़ा है। अभी तुम हो मैनारिटी। वह हैं (मे)जोरिटी। तो तुम्हारा कौन मानेंगे। जब तुम्हारी वृद्धि हो जावेगी फिर तुम्हारे योगबल से बहुत खैंचकर आवेंगे। जितना तुम्हारे से कट निकलती जावेगी उतना ही बल भरता जावेगा। ऐसे नहीं बाबा जानीजाननहार है। यहां (आ)कर सभी को देखते हैं। सभी के अवस्थाओं को जानते हैं। बाप बच्चों की अवस्था को नहीं जानेंगे? सभी कुछ मालूम रहता है। इसमें अन्तर्यामी की बात नहीं। अभी तो कर्मातीत अवस्था हो न सके। कड़ी2 भूलें होना सम्भव ....। महारथियों से भी होती हैं। अरे, बात–चीत–चलन आदि सभी प्रसिद्ध हो जाते हैं। अभी तो दैवीचलन बनानी है। देवताएँ सर्वगुण समपन्न..... हैं ना। अभी तुमको ऐसा बनना है। कहां वह असुर कहां देवताएं; परन्तु माया किसको भी छोड़ती नहीं। छुई–मुई बना देती है। एकदम मार डालती है। 5 सीढ़ी है ना। देह–अभिमान आने से... ऊपर से एकदम गिरते हैं। गिरा और मरा। आजकल अपन को मारने लिये कैसे2 उपाय लेते हैं। एकदम 20 मंजिल (से) कूदते हैं। तो एकदम खत्म हो जाते हैं। ऐसे भी न हो फिर हास्पिटल में पड़े रहें जो दुःख भोगें। 5 मंजिल से गिरे और न मरे तो कितना दुःख भोगते रहेंगे। कोई अपन को आग लगाते हैं, अगर उनको कोई बचा लेते हैं तो उनको कितना दुःख सहन करना पड़ता है। जल जाये तो आत्मा भाग जावेगी ना। इसलिये जीवघात करते ...। शरीर को ही खत्म कर देते हैं। समझते हैं शरीर छोड़ने से दुःखों से छूट जावेंगे। जोश आता है तो बस। ...ई तो हॉस्पिटल में कितना दुःख भोगते रहते हैं। अगर डाक्टर समझते हैं यह छूट नहीं सकते हैं, इनसे तो (गो)ली दे दें तो खत्म हो जाये; परन्तु वह समझते हैं ऐसे गोली देकर मारना महापाप है। वास्तव में यह पाप नहीं है। यह तो किसको दुःख से छुड़ना पुण्य का काम है। आत्मा खुद कहती है इस पीड़ा भोगने से तो शरीर छोड़ दें। हमारा शरीर छूट जाये। अभी शरीर कौन छुड़ावे? कोई तो आपे भी गोली ले लेते हैं। यह है अपार (दुःखों) की दुनियां। वहां है अपार सुख। तुम बच्चे समझते हो हम अभी रिटर्न होते हैं। दुःखधाम से सुखधाम जाते ...। अभी बाप जो सुखधाम का मालिक बनाते हैं उनको याद करना है। इन द्वारा बाप समझाते हैं। चित्र भी .... ना ब्रह्मा द्वारा राजयोग की स्थापना। तुम कहते हो बाबा हम आपसे अनेक बार स्वर्ग का वरसा .... आये हैं। बाप भी संगम पर ही आते हैं जबकि दुनियां को बदलना है। तो बाप कहते हैं मैं आया हूं तुम बच्चों को दुःख से छुड़ाकर सुख के पावन दुनियां में ले जाने। पावन दुनियां में भूठ भर रहते हैं। बुलाते हैं पतित–पावन..... यह थोड़े ही समझते हैं हम महाकाल को बुलाते हैं कि हमको इस छी छी दुनियां से घर ले (च)लो। जरूर बाबा आवेगा। हम मरेंगे तब तो पीस होगी ना। शांति2 करते रहते हैं। शान्ति तो है शान्तिधाम में; परन्तु इस दुनियां में शान्ति कैसे हो जब तक कि इतने ढेर मनुष्य हैं। सतयुग में सुख शान्ति था। अभी कलियुग (में) अनेक धर्म हैं वह जब खत्म हो, एक धर्म की स्थापना हो तब तो सुख–शान्ति होवे ना। हाहाकार के बाद फिर जयजयकार होती है। आगे चल देखना मौत की बाजार कितनी गर्म होती है। कैसे मरते हैं। बॉम से भी आग लगती है। एक/दो वर्ष चलकर देखो फिर तो बहुत कहेंगे बरोबर विनाश होगा। तुम जानते हो यह सृष्टि चक्र तो फिरना ही है। विनाश जरूर होना है। एक धर्म की स्थापना बाप कराते हैं राजयोग भी सिखलाते हैं। .... की सभी अनेक धर्म खलास हो जावेंगे। गीता में कुछ दिखाया नहीं है। 5 पाण्डव और कुत्ता हिमालय में जाकर .... गये। फिर रिजल्ट क्या? प्रलय कर दी। भल जलमय होती है; परन्तु सारी दुनियां जलमय नहीं हो सकती। (भार)त तो अविनाशी पवित्र खण्ड है। उसमें भी आबू सबसे पवित्र तीर्थ स्थान है जहां बाप (आ)कर सर्व की सद्गति करते हैं। दिलवाला मंदिर कैसा अच्छा यादगार है। कितना अर्थ सहित है। परन्तु जिन्होंने..... बनाया है वह नहीं जानते। फिर अच्छे समझु तो थे ना। द्वापर में जरूर अच्छी समझ होंगी। कलियुग में तो है तमोप्रधान। द्वापर में फिर भी तमो बुद्धि होगी। सभी मंदिरों से यह ऊंच है जहां तुम बैठे हो। तुम

जानते हो हम हैं चैतन्य। वह है जड़। हमारा ही यादगार है; परन्तु हम चैतन्य दिलवाड़ा मंदिर लिख नहीं सकते हैं। जैनीलोग हंगामा मचा देवे। फिर यह कौन हैं। तुम तो जानते हो यह हमारा ही यादगार है। वैकुण्ठ कोई छत में थोड़े ही होता है; परन्तु बनावे कहां। इसलिये युक्ति से बना हुआ है। यह भी तुम समझते हो यह ... हमारा पूरा यादगार है। बाकी 5/7 वर्ष यह मंदिर बनेंगे फिर तो टूटने को समय आवेगा। कोई कहां, कोई कहां विनाश होगा, तो होलसेल से मौत होगा। सभी खलास हो जावेंगे। होलसेल महाभारत लड़ाई (ल)गेगी। फिर सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी एक खण्ड रहेगा। भारत बहुत छोटा होगा। बाकी सभी खलास हो जावेंगे। स्वर्ग कितना छोटा होगा। यह ज्ञान अभी तुम्हारी बुद्धि में है। कोई को समझाने में भी देरी नहीं लगती। (य)ह है पुरूषोत्तम संगम युग। यहां कितने ढेर मनुष्य हैं और वहां कितने थोड़े मनुष्य होंगे। यह सभी खत्म हो जावेंगे। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट होगी। जरूर स्वर्ग से रिपीट करेंगे। पिछाड़ी में तो नहीं जावेंगे। यह ड्रामा का चक्र अनादि है जो फिरता ही रहता है। इस तरफ कलियुग उस तरफ है सतयुग। हम हैं संगम पर। यह भी समझते हो बाप आते हैं, बाप को रथ तो जरूर चाहिए ना। आत्मा जब शरीर में आती है तब ही चुरपुर करती ....। आत्मा निकल जाये तो शरीर जड़ हो जाता। तो बाप समझाते हैं अभी तुम घर जाते हो। यह बनने का है। दैवीगुण भी धारण करनी है। माया ऐसी है जो एकदम चुहरा बना देती है। तब लिखते हैं बाबा हमने काला .... कर दिया। माया ने जीत लिया। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर हराम खोर..... बाप को सर्वव्यापी ..... कितनी ग्लानि करते हैं। देवताओं की भी ग्लानि कर दी है। व्यभिचार से लव–कुश पैदा हुये। यह हो कैसे सकता। तो ऐसी बातें बनाने वालों को चर्याई ही कहेंगे, नहीं तो और क्या कहेंगे। एकदम मैडचैप्स बन जाते हैं। ..... तो भारत क्या था। ऐसी2 झूठी कहानियां सुनकर भी कितना खुश होते हैं। भागवद्, महाभारत, गीता में ...न की जितनी ग्लानि की है उतनी और कोई शास्त्रों में नहीं की है। इसलिये तुम लिखते हो सच्ची गीता पाठशाला। बाकी भक्ति मार्ग में हैं झूठे। तो भी कितना हंगामा मचाते हैं। खेल कितना वन्डरफुल है। यह भी बच्चों को समझाया जाता है रावण राज्य और रामराज्य किसको कहा जाता है। पतित से पावन कैसे बनते हैं। .... पावन से पतित कैसे बनते हैं। यह खेल का राज़ बैठ समझाते हैं। बाप नॉलेजफुल बीजरूप है ना। चैतन्य है। .... आकर समझाते हैं। बाप ही कहेंगे सारे कल्प वृक्ष का राज़ समझा। इनमें क्या2 होता है, तुमने इसमें कितना (पा)र्ट बजाया। आधा कल्प है दैवी राज्य आधा कल्प है आसुरी राज्य। अच्छे2 बच्चे जो हैं उन्हों की बुद्धि में सारी नालेज रहती है। बाप आप समान टीचर बनाते हैं ना। टीचर्स में भी नम्बरवार होते हैं। कई तो टीचर होकर फिर बिगड़ पड़ते हैं। बहुतों को सिखलाकर फिर खुद खत्म हो जाते हैं? छोटे2 बच्चों में भिन्न2 संस्कार वाले (हो)ते हैं। कोई तो देखो नम्बरवन शैतान। कोई फिर परिस्तान में जाने लायक। बाप समझाते हैं ज्ञान न उठाने से (अप)नी चलन न सुधारने से फिर सभी को दुःख देते रहते हैं। यह भी शास्त्रों में दिखाया हुआ है। असुर छिप... थे। असुर तो सभी हैं ना। असुर सुनकर जाते हैं फिर ट्रेटर बन कितनी तकलीफें देते हैं। यह तो सभी होता रहता है। कई बड़े शैतान निकलते हैं। घमासान मचाते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप को ही स्वर्ग को स्थापन करने आना पड़ता है। बहुत असुर बन जाते हैं। सभी से बड़े ते बड़े असुर हैं सन्यासी। जो कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी कहते हैं भगवान ने लिखी है। अभी फिर भगवान कैसे बैठ लिखेगा। सतयुग में शास्त्र कहां से आये। असुर लो .... कह देते हैं यह शास्त्र आदि सभी परम्परा से चले आ रहे हैं। माया बड़ी जबरदस्त है। दान देते हैं फिर माया बुद्धि फिरा देती है। आधा को जरूर माया खा जावेगी तब तो कहते हैं माया बड़ी दुस्तर है। आधा कल्प माया राज्य करती है। तो जरूर इतनी पहलवान होगी ना। माया से हराने वाले का क्या हाल हो जाते।

अच्छा, मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।